Airo International Research Journal
Volume XII, ISSN: 2320-3714
August 2017
Impact Factor : 0.75 to 3.19
UGC Listed (Approved Number Number 63012)

नगरीय स्थानों के विकास में बाधक कारक एवं नगरीय स्थानों की समस्याएँ

निचला गंगा–घाघरा दोआब क्षेत्र

डॉ. शम्भू नाथ यादव

प्रधानाचार्य

प्राथमिक विद्यालय

संवादपुर, शिक्षा क्षेत्र

पंदह, बलिया, उत्तर प्रदेश

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र में घाघरा दोआब क्षेत्र में नगरीय स्थानों के विकास में बाधक कारक एवं उनसे उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। आज का मानव समाज औद्योगिक एंव प्रौद्योगिक क्रान्तियों के साथ–साथ नगरीय क्रान्ति के दौर से गुजर रहा है। यही कारण है कि विश्व में नगरीकरण के साथ–साथ नगरों की संख्या में वर्तमान सदी के उत्तरार्द्ध में तीव्र वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में नगरों के क्षेत्रफल में प्रतिदिन विस्तार होता जा रहा है। तथा उनके अन्तर्गत बहुत बड़े क्षेत्र में भवन–निर्मित होते जा रहे है। नगर का विकास इतनी शीघ्रता से और अनियमित होता जा रहा है कि उसे पूरी तरह योजनाओं के अनुरूप नहीं बसाया जा सका है। जिससे आज नगरों को

सामाजिक–आर्थिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से अभिशापित माना जाने लगा है क्योंकि नगरों की उत्पत्ति एवं विकास अनियोजित रूप से हुआ हैं आज नगरों में भूमि का अभाव और भू–मूल्य, मकानों का अभाव और उनका अधिक किराया होता जा रहा है। यही कारण है कि नगरीय स्थानों में विकास के संभावना अनेक प्रकार के बाधक तत्वों के साथ निर्मित हो रही हैं।

बीज शब्द : दोआब, नगरीय स्थान, नगरीकरण, औद्योगिक क्रान्ति, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश।

अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह है कि घाघरा दोआब क्षेत्र में स्थित नगरीय स्थलों के विकास में जो बाधक तत्व हैं और उनसे जो समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं उनका ठीक–ठीक मूल्यांकन किया जा सके।

विधि तंत्र – प्रस्तुत अध्ययन में पूर्ववर्ती विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विचारों और संकल्पनाओं का विवेचनात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया है।

परिचय

भारतीय समाज में तीव्र गति से परिवर्तन होने के साथ नगरीकरण भी तेजी से हो रहा है। भारत की लगभग 1 अरब जनसंख्या में 74 करोड़ लोग

ग्रामीण क्षेत्र में तथा 28 करोड़ लोग नगरीय क्षेत्रों में रहते है। नगरीय जनसंख्या 31.2 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। यदि नगरीय जनसंख्या को एक अलग देश या प्रदेश मान लिया जाये तो उसकी संख्या चीन, भारत तथा अमरीका के अतिरिक्त विश्व में चौथी सबसे बड़ी जनसंख्या होगी। संयुक्त राष्ट्र संघ के भविष्योन्मुख ऑकड़ों के अनुसार 2030 तक भारत में नगरीय जनसंख्या 57 करोड़ हो जायेगी जो भारत की जनसंख्या का 40 प्रतिशत हो जायेगी।[1] सम्भवतः इसी तथ्य के प्रति सचेत करते समय भारत के राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने कहा कि ग्रामीण से नगरीय क्षेत्रों में होने वाले पलायन को रोकना होगा। उन्होंने गॉव के शहरी विकास की बात कही थी।

2001 की जनगणना में 35 ऐसे शहर हैं जिनकी जनसंख्या 10 लाख से अधिक है। 393 शहर ऐसे हैं जिनकी जनसंख्या 1 लाख से अधिक है। 2021 तक ऐसे शहरों की संख्या 500 से अधिक होगी।[2]

सबसे अधिक चिन्तनीय तथ्य यह है कि भारत के नगरीय क्षेत्रों में गरीब जनसंख्या में भी वृद्धि हो रही है। रोजगार की तलाश में लोग नगर क्षेत्र में आ जाते हैं तथा रोजगार पाकर भी उनका जीवन स्तर उठ नहीं पाता हैं।

भारत तथा उत्तर प्रदेश के प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में नगरीय सुविधायें एवं

ढॉचा ऐसा नही है कि इस बढ़ती जनसंख्या को जीवन–गुणवत्ता प्रदान कर सके। विश्व में मनुष्य के जीवन को खतरे में डालने वाले कारकों में नगरीय सुविधाओं का अभाव भी है।

उत्तर प्रदेश के प्रशासनिक आधार पर निचला गंगा–घाघरा दोआब के छः जनपदों में 23 तहसील तथा 40 नगरीय केन्द्र हैं जिसके अन्तर्गत बलिया जनपद की बिल्थरारोड, सिकन्दरपुर, रसड़ा, बलिया, बॉसडीह एवं बैरिया तहसील, आजमगढ़ जनपद की बुढ़नपुर, सगड़ी, आजमगढ़, निजामाबाद, फूलपुर, लालगंज, और मेहनगर तहसीले, मऊ जनपद की घोसी, मधुबन मऊनाथ भंजन तथा मुहम्दाबाद गोहना तहसील, गाजीपुर जनपद की जखनिया, सैदरपुर, गाजीपुर एवं मोहम्दाबाद तहसील, तथा वाराणसी जनपद की वाराणसी एवं जौनपुर जनपद की केराकत तहसील को सम्मिलित किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के सघन क्षेत्रों में से एक है। चूँकि यह प्रदेश एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहॉ 2/3 से भी अधिक आबादी कृषियेत्तर कार्यो में लगी हुई है। इस सम्पूर्ण प्रदेश की जनसंख्या वर्ष 2001 के जनगणना के अनुसार 14511021 है जो कुल उ0प्र0 की जनसंख्या का 8. 37 प्रतिशत भाग है। इस दोआब में सबसे अधिक जनसंख्या आजमगढ़

जनपद में 3939916 निवास करती है। जहॉ पर जनसंख्या घनत्व 974 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। आजमगढ़ जनपद में सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व सगड़ी तहसील में है जहॉ पर 1372 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 निवास करते है। तत्पश्चात निजामाबाद तहसील में जनसंख्या घनत्व 1011 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 जनसंख्या मिलती है। यहॉ पर उपलब्ध भूमि एवं जनसंख्या के अनुपात में भारी अन्तर मिलने के कारण नगरीय केन्द्रों का विकास कम ही हुआ है। अध्ययन क्षेत्र के जनपद मऊ की कुल जनसंख्या 1853997 हैं मऊ का जनसंख्या घनत्व 1082 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है

मऊ घोसी, आजमगढ़, निजामाबाद प्रदेश एक वृहद सामाजिक, सांस्कृतिक, नगरीय क्षेत्र है जहॉ पर साक्षरता दर 57.44 प्रतिशत, अनुसूचित जाति की संख्या 13.35 प्रतिशत, नगरीय क्षेत्रों में काम करने वाले कुल कर्मियों की संख्या 35.25 प्रतिशत, पारिवारिक उद्योग कर्मियों की संख्या 54. 04 प्रतिशत, स्त्री–पुरूष अनुपात 954, मकानों में उपलब्ध रसोईघर 66.68 प्रतिशत एवं मकानों में उपलब्ध स्नानगृह 47.81 प्रतिशत है **जो सम्पूर्ण निचला गंगा–घाघरा दोआब के सामाजिक–सांस्कृतिक नगरीय क्षेत्रों के विकसित प्रदेशों में से एक है एवं सबसे पिछड़ा सामाजिक–सांस्कृतिक नगरीय क्षेत्र, बॉसडीह, सिकन्दरपुर, बिल्थरारोड का प्रदेश है** जहॉ पर कुल साक्षरता दर 52.11 प्रतिशत, अनुसूचित जाति की संख्या 9.93 प्रतिशत कुल नगरीय क्षेत्रों

में काम करने वाले लोगों की संख्या 10.15 प्रतिशत, पारिवारिक उद्योग कर्मियों की संख्या 58.41 प्रतिशत लिंगानुपात 863 मकानों में उपलब्ध रसोईघर 44.18 प्रतिशत, मकानों में स्नानगृहों की संख्या 28.36 प्रतिशत है। जो निचला गंगा–घाघरा दोआब में अल्पविकसित सामाजिक–सांस्कृतिक नगरीय क्षेत्र को इंगित करता है। इसके अतिरिक्त जखनिया–सैदपुर–गाजीपुर भी अल्प विकसित क्षेत्र है। बुढ़नपुर–फूलपुर एवं वाराणसी अर्द्ध विकसित क्षेत्र है। यदि इन प्रदेशों को तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि जहॉ **आजमगढ़** परिक्षेत्र में साक्षरता दर 57.44 प्रतिशत है। वहीं **बॉसडीह, सिकन्दरपुर, बिल्थरारोड** में यह 52.11 प्रतिशत है जो नगरीय केन्द्रों अनुसूचित जाति की संख्या के निर्धारण में स्पष्ट रूप से एक दूसरे से अलग दृष्टिगोचर होते है।

इस प्रकार, आज का मानव समाज औद्योगिक एंव प्रौद्योगिक क्रान्तियों के साथ–साथ नगरीय क्रान्ति के दौर से गुजर रहा है। यही कारण है कि विश्व में नगरीकरण के साथ–साथ नगरों की संख्या में वर्तमान सदी के उत्तरार्द्ध में तीव्र वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में नगरों के क्षेत्रफल में प्रतिदिन विस्तार होता जा रहा है।[3] तथा उनके अन्तर्गत बहुत बड़े क्षेत्र में भवन–निर्मित होते जा रहे है। नगर का विकास इतनी शीघ्रता से और अनियमित होता जा रहा है कि उसे पूरी तरह योजनाओं के अनुरूप नहीं

बसाया जा सका है। जिससे आज नगरों को सामाजिक–आर्थिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से अभिशापित माना जाने लगा है क्योंकि नगरों की उत्पत्ति एवं विकास अनियोजित रूप से हुआ हैं आज नगरों में भूमि का अभाव और भू–मूल्य, मकानों का अभाव और उनका अधिक किराया होता जा रहा है।

नगरों के विकास के साथ–साथ उन्हें अनेक ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिनकी पहले कभी चिन्ता तक न थी। जैसे– जल की पूर्ति, नगर की सफाई, यातायात व्यवस्था, आवश्यक उपयोगी सुविधायें इत्यादि। जैसे–जैसे नगरों की जनसंख्या में वृद्धि होती जाती है, वैसे–वैसे इन सुविधाओं कों और अधिक जुटाने में आवश्यकता बढ़ती जाती है। इनकी कमी होने पर नगर में अनेक समस्याएँ पैदा हो जाती है।[4] बड़े–बड़े नगरों में ये सामाजिक बुराईयॉ विकराल रूप धारण कर लेती है। इनमें गन्दी बस्तियॉ, निवास स्थानों का अभाव, बेरोजगारी की समस्या कारखानों में कार्य सम्बन्धी असन्तोषजनक दशाएँ, आमोद–प्रमोद तथा स्वास्थ्य सेवाओं की कमी पाई जाती है।[5] भोजन सम्बन्धी वस्तुएँ शुद्ध नहीं मिलती, सामाजिकता का अभाव मिलता है। सामाजिकता तथा शिष्टाचार केवल समान कार्य करने वाले में ही होता है। जिसे संघो द्वारा सदैव बनाकर रखने का प्रयास किया जाता है।[6]

ममफोर्ड के शब्दों में – ''**एक बड़ा नगर आर्थिक दृष्टि से अवांछनीय, राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर, जैविक दृष्टि से पतन की ओर उन्मुख तथा**

सामाजिक दृष्टि से असन्तोषजनक होता है।

प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि वह नगर के मध्य भाग के समीप रहे क्योकि वहॉ पर लगभग सभी सुविधाओं का जमाव पाया जाता है। नगर के केन्द्र में व्यावसायिक प्रतिष्ठान अपना पॉव जमाकर रिंहाइशी क्षेत्रों को पीछे धकेलते जाते है। इस प्रकार जैसे–जैसे व्यावसायिक क्षेत्र विकसित होता जाता है, वैसे–वैसे निवास क्षेत्र व्यावसायिक क्षेत्र को घेरते हुए नगर की सीमाओं का विस्तार करते चले जाते है। निवास क्षेत्र के पीछे हटने के साथ ही साथ पानी तथा रोशनी का प्रदाय क्षेत्र बढ़ता जाता है। नगर की इस अवस्था में बहुधा पुराना व्यावसायिक केन्द्र अपना महत्व खो बैठता है, नगर की सीमाओं का विस्तार होता है, परन्तु उसका हृदय स्थल कमजोर पड़ जाता है।

विकसित देशों में बहुत से नगरों का विकास रूक गया है। केन्द्रभिमुखी शक्ति के कारण नगर बाहर की ओर फैलते जा रहे है। विकासशील देशों में जहॉ नगरीय विकास अभी आरम्भिक अवस्था में है, नगरों में अनेक समस्याऍ अभी से उभरकर ज्वलन्त रूप में सामने आ गई है।[7] प्रश्न यह उठता है कि यह समस्याऍ क्यों पैदा हो गई है? इसके कारण यह भी हो सकते हैं – नगरों के आकार एवं उनके घनत्व में भारी वृद्धि का होना, नगरों के अपने समीपवर्ती क्षेत्र पर दैनिक आवश्यक सामग्री के लिए जैसे– दूध, साग–सब्जी,

अनाज, आदि के लिए बढ़ती हुई निर्भरता, नगरीय सुविधाओं का तेजी से विकास न किया जाना, आर्थिक साधनों की कमी, नगरों को व्यवस्थित रूप से न बसाया जाना आदि।[8]

नगरों की समस्याओं को स्पष्ट करते हुए डॉ0 गरमीला ने लिखा है कि **''एक सीमित भूमि पर एक वृहद् जन समूह के निवास करने से कई समस्याएं एक साथ उठ खड़ी होती है। इनमें सबसे बड़ी समस्या स्थान की है जो अनेक प्रकार के नगरीय भूमि–उपयोगों,आवास, व्यवसाय, यातायात तथा अन्य सामाजिक कार्यों में लाया जाता है।**[9] रामचन्द्र तिवारी ने नगरीय समस्याओं को दो वर्गो में बांटा है : प्रथम – नगर के भीतर की समस्याएं, जिसमें नगर की प्रशासनिक सीमा के अन्तर्गत रहने वाला क्षेत्र या उस पर निवास करने वाले लोग प्रभावित होते है। द्वितीय – नगर के बाहर की समस्याएं, जिसमें नगरीय उपान्त या प्रभाव क्षेत्र अथवा उसके नागरिक प्रभावित होते है। नगरों की आन्तरिक समस्याओं में स्थान की समस्या, आवासीय समस्या, परिवहन की समस्या, जलापूर्ति की समस्या, प्रदूषण की समस्या, कूड़ा–करकट–मलमूत्र विसर्जन की समस्या, विद्युत एवं ईधन आपूर्ति की समस्या, प्रशासकीय प्रबन्ध की समस्या आदि प्रमुख है।[10]

पिछली सदी में तीव्र नगरीकरण के कारण नगरों में ऐसी समस्याओं का जन्म हुआ है जिसके सम्बन्ध में पहले कोई सोचा भी नही था। आज विश्व

स्तर पर अनेक नगरीय समस्याएं विभिन्न रूपों में नगरीय जीवन को प्रभावित करने लगी है। ऐसी समस्याओं के कारण नगरों में क्षमता से अधिक जनसंख्या का संकेन्द्रण है। नगरों में अत्यधिक जनसंख्या संकेन्द्रण से अनेक प्रकार की समस्याओं का उदय होता और उनके समाधान के प्रति सार्थक प्रयास न होने के कारण भारत जैसे विकासशील देशों में नगरीय जीवन कठिनाइयों से घिरता जा रहा हैं। नगरों की बढ़ती विशालता और घटती नगरीय जीवन की गुणवत्ता के कारण अब विद्वानों को सोचने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है कि इस प्रवृत्ति को कैसे नियन्त्रित किया जाय, ताकि बढ़ती नगरीय समस्याओं को कम किया जा सके।

निचला गंगा–घाघरा दोआब के सभी नगर सामान्यतः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रखते है। इनके विकास की एक लम्बी परम्परा रही है। जिससे इन नगरों के आकार में वृद्धि शनैः–शनैः लम्बे समय में हुई है। इन नगरों के बसाव पर किसी सुनियोजित व्यवस्था ने काम नहीं किया है। जिससे आज इस क्षेत्र के नगर अनेक नगरीय समस्याओं से ग्रस्त है। निचला गंगा–घाघरा दोआब के विभिन्न नगरों में पायी जाने वाली प्रमुख नगरीय समस्याओं को निम्न रूपों में देखा जा सकता है–

1. भूमि उपयोग सम्बन्धी समस्याएँ :–

नगरों में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, उनमें कृषि के अतिरिक्त अन्य

व्यवसायों की प्रधानता, उनकी बढ़ती समृद्धि आदि के कारण उनमें आवास, उद्योग, यातायात, वाणिज्य आदि कार्यो के लिए भूमि की मॉग उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। इससे एक तरफ जहॉ स्थान कमी की समस्या का अविर्भाव होता है, वहीं दूसरी तरफ भूमि के बढ़ते मूल्य, नगरीय घनत्व में वृद्धि, गगनचुम्बी इमारतों के निर्माण, कमजोर और कम आय वर्ग वाले नगरवासियों का सस्ते भूमि मूल्य वाले क्षेत्रों की ओर प्रवास, मलिन बस्तियों के निर्माण, नगर के भौतिक सामाजिक पर्यावरण में गिरावट, कृषि भूमि का अतिक्रमण, ग्रामीण पर्यावरण पर बढ़ते दबाव आदि की प्रवृत्तियाँ अपना कुप्रभाव बढाने लगती है। नगरों में अनियोजित भूमि उपयोग, अनेक नगरीय समस्याओं का कारण बन जाता है। अनियोजित भूमि उपयोग के फलतः नगर सीमा में अनेक ऐसे भूमि उपयोग पाये जाते है जिनसे सम्पूर्ण नगरीय जीवन प्रभावित होता है। जैसे – नगरीय सीमा में खतरनाक उद्योगों की स्थापना, सड़कों के अवरोध के रूप में मकानों का निर्माण, जल निकासी से सम्बन्धित अवरोध, अनुपयुक्त भूमि पर आवासीय गृहों का निर्माण आवागमन के मार्गो के लिए कम भूमि आवंटन आदि।

अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरों का विकास भी अनियोजित रूप से हुआ है। फलतः नगरों में भूमि उपयोग से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ इन नगरों की विशेषता बन गई है। नगरों के केन्द्रीय भाग जो अनियोजित रूप से सघन

आबाद क्षेत्र है नगरीय समस्याओं के केन्द्र है। जहॉ एक तरफ भूमि का मूल्य अत्यन्त ऊँचा हैं वहीं दूसरी ओर भूमि के गलत और अनियोजित उपयेाग से अनेक समस्याएँ जैसे– जल निकासी, सफाई एवं कूड़ा के निस्तारण, संकीर्ण सड़के, खुली भूमि का अभाव प्रमुख हो गई है।

2. आवासीय समस्याएँ :–

मानव के मूलभूत आवश्यकताओं में भोजन के पश्चात् वातावरण से अनुकूलन स्थापित करने हेतु आवास मानव की अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता है। नगरों में जितनी तीव्रता से जनसंख्या की वृद्धि होती है उतनी तीव्रता से उनके रहने के मकानों की वृद्धि नहीं होती है। औद्योगिक नगरों में यह स्थिति और विषम हो जाती है। नगरीय जनसंख्या में वृद्धि के साथ–साथ अधिक मकानों की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार आय में वृद्धि एवं जीवन स्तर में उन्नयन के कारण भी लोग छोटे तथा सघन बसे क्षेत्रों के पुराने मकानों को छोड़कर बड़े मकानों एवं खुले में जाना पसन्द करते है। जिससे नगर का विस्तार होता है। यद्यपि कि भूमि का उपयोग उद्योग–धन्धों, व्यापार–व्यवसाय के लिए अधिक होता है। फिर भी नगर का अधिकांश भाग आवासीय कार्यो के लिए ही प्रयुक्त होता है। जनसंख्या के विकास के अनुपात में प्रत्येक नगरों में आवास गृहों का निर्माण बहुत ही कम होता है। फलस्वरूप निचला गंगा–घाघरा दोआब में गन्दी बस्तियों का प्रतिशत बढ़ता

जा रहा है।

निचला गंगा–घाघरा दोआब के विभिन्न नगरों मे आवासीय स्थिति का अध्ययन मकानों के उपयोग और स्वरूप के साथ ही स्नानगृह/शौचालय की उपलब्धता के आधार पर किया गया है। निचला गंगा घाघरा दोआब में नगरीय आवास की स्थिति के अन्तर्गत निजी आवास,निजी किराये के मकान,सरकारी आवास एवं अन्य आवास मे विभाजित किया गया हैं। अध्ययन क्षेत्र के नगरों मे 83.90 प्रतिशत आवास निजी,9.39 प्रतिशत आवास निजी किराये के,1.67 प्रतिशत सरकारी आवास और 4.11 प्रतिशत अन्य तरह के आवास स्थित हैं। विभिन्न नगरों के स्तर पर इनमें भिन्नता मिलती है। निजी आवास का सर्वाधिक भाग कोपागंज में (09.80 प्रतिशत) व सबसे कम सैदपुर में (80.03प्रतिशत) है। निजी किराये के आवास का सर्वाधिक भाग आजमगढ़ नगर मे (14.12 प्रतिशत) व सबसे कम बलिया में (98 प्रतिशत) मिलता है। सरकारी आवास का सर्वाधिक भाग रसड़ा में (3.62 प्रतिशत) व सबसे कम अदरी में (0.12 प्रतिशत) मिलता है। अन्य प्रकार के आवासों का सर्वाधिक भाग सिकन्दरपुर नगर मे (6.82 प्रतिशत) व सबसे कम सादात में (1.15 प्रतिशत) मिलता है।

निचला गंगा–घाघरा दोआब के आवासीय विशेषताओं का आवास के उपयोग के आधार पर केवल आवास,आवास एवं उद्योग तथा आवास,उद्योग

एवं व्यापार के रूप में विभाजित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में आवास के उपयोग के आधार पर नगरों में केवल आवास के रूप में 77.40 प्रतिशत उपयोग किया जाता है,13.04 प्रतिशत आवास का उपयोग आवास एवं उद्योग के लिए किया जाता है जबकि 9.38 प्रतिशत आवासों का उपयोग आवास,उद्योग एवं व्यापार के रूप मे किया जाता है। केवल आवास के रूप मे आवास के उपयोग का सबसे अधिक भाग वाराणसी में 86.00 प्रतिशत सबसे कम सहतवार नगर में (07.00 प्रतिशत) मिलता है। आवास व उद्योग के रूप में सबसे अधिक अधिवासों का उपयोग (20.08 प्रतिशत) आजमगढ़ नगर में तथा सबसे कम मेहनगर में (7.50 प्रतिशत) मिलता है। आवास,उद्योग एवं व्यापार के लिए मकानों के उपयोग का सबसे अधिक भाग (15.70 प्रतिशत) मोहम्मदाबाद नगर में जबकि सबसे कम सैदपुर नगर में (1.80 प्रतिशत) मिलता हैं।

मकानों के स्वरूप के आधार पर अध्ययन क्षेत्र के नगरों के आवास पर पक्का,कच्चा व झोपड़ी में विभाजित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के नगरीय आवासों में से (82.50 प्रतिशत) पक्के (11.15 प्रतिशत) कच्चे व (5.97 प्रतिशत) झोपड़ी मिलती है। विभिन्न नगरों के स्तर पर पक्के मकानों का सबसे अधिक भाग (93 प्रतिशत) अतरौलिया नगर में व सबसे कम (74 प्रतिशत) अजमतगढ़ नगर में मिलते हैं। कच्चे आवासों का सबसे अधिक भाग (16.00

प्रतिशत) बलिया में मिलते हैं व सबसे कम कच्चे मकान फूलपुर एवं आजमगढ़ नगर में (05.00 प्रतिशत) मिलता है। झुग्गी–झोपड़ी के अधिक भाग (13.00 प्रतिशत) अजमतगढ़ में तथा सबसे कम (01.00 प्रतिशत) अतरौलिया नगर में मिलता है।

स्नानगृह एवं शौचालय युक्त आवास उच्च जीवन स्तर के द्योतक होते है। निचला गंगा–घाघरा दोआब में स्नानगृह एवं शौचालय युक्त आवासों का प्रतिशत अत्यन्त कम है जो अध्ययन क्षेत्र के पिछड़ेपन, गरीब जनसंख्या एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के अभाव का द्योतक है। जनपद के नगरीय क्षेत्रों में (88.73 प्रतिशत) आवासों मे स्नानगृह और शौचालय उपलब्ध है जबकि (11.27 प्रतिशत) आवासों मे स्नानगृह और शौचालय का अभाव है। तालिका से स्पष्ट है कि स्नानगृह और शौचालय सबसे अधिक (96 प्रतिशत) हाफीजपुर नगर मे तथा सबसे कम (82 प्रतिशत) अमिला मे मिलते हैं। विभिन्न नगरों में स्नानगृह और शौचालयों का अभाव सबसे अधिक 18 प्रतिशत अमिला मे और सबसे कम (04 प्रतिशत) हाफीजपुर नगर मे मिलता है।

3. जलापूर्ति की समस्याएँ :–

मानव जीवन में जल का विशेष महत्व है। इसके बिना वह जीवित नहीं

रह सकता है। जल का प्रतिस्थापन मुश्किल है। जल की अपर्याप्तता और अशुद्धता से मानव स्वास्थ्य प्रभावित होता है। जल के इसी महत्व के कारण प्राचीन काल से ही नगरों की स्थापना जल स्रोतों के किनारे हुई है। परन्तु आधुनिक काल में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि और जल के प्रति व्यक्ति अधिक खपत के कारण उपलब्ध जल संसाधन समाप्त होते जा रहे है। साथ ही नगरीय वर्हिस्राव के परिणामस्वरूप नगर में उपलब्ध जल की मात्रा का एक बड़ा भाग प्रदूषित होकर उपयोग के लिए हानिकारक हो रहा है। ऐसे में नगरीय अधिकारियों द्वारा जल की आपूर्ति को निरन्तर बढ़ाये जाने के बावजूद नगरों में जल की मॉग निरन्तर बढ़ती जा रही है और जल संकट गहराता जा रहा है। नगरीय जल के अनेक स्रोत है, जिससे नदी, झील, भूमिगत जल, झरना प्रमुख है। नगरों में जल की मॉग और आपूर्ति के बीच सदैव अन्तर पाया जाता है। जिसे नगर नियोजक और प्रशासनिक अधिकारी नयी–नयी प्रायोजनाओं के माध्यमसे कम करने का प्रयास करते है। जहॉ कहीं ऐसा नहीं होता हैं नगरीय जीवन प्रभावित होता है।

नगरों में जल का प्रयोग, पीने, सफाई, मल–बहाव और औद्योगिक इकाइयों द्वारा किया जाता है। पेय और सफाई के लिए नगरों की जल आपूर्ति व्यवस्था के कई आधार होते है। लेकिन पहाड़ी–पठारी परिवेश में नदी या तालाब पर निर्भर रहना पड़ता है। सामान्यतः पीने और सफाई के लिए

प्रति व्यक्ति 50 से 60 लीटर शुद्ध जल की आवश्यकता पड़ती है। यदि लान में भी सिंचाई करनी हो तो यह मात्रा बढ़ जाती है। नगर में सामान्यतः आपूर्ति जल का आधा भाग आवासीय घरों में, 25 प्रतिशत सार्वजनिक उपयोग में और 25 प्रतिशत औद्योगिक कार्यो में प्रयुक्त होता है। नगरों में शुद्ध जल की कमी की स्थिति में नागरिक अशुद्ध जल पीने के लिए बाध्य हो जाते है। भारत में औसतन प्रति व्यक्ति शुद्ध जल की आपूर्ति नगरों में 20 से 25 लीटर है और मात्र 20 प्रतिशत गृहों में शुद्ध जल आवश्यकता के अनुसार प्राप्त हो पाता है।

नगरों में जलापूर्ति की समस्या के समाधान के लिए अब भी प्राथमिकता तय नहीं हो पायी है जबकि अनुचित जल के प्रयोग से उत्पन्न बीमारियों और कठिनाइयों के निदान के लिए संभावित सुधार–खर्च से अधिक व्यय किया जा रहा है।

निचला गंगा–घाघरा दोआब के विभिन्न नगरों में भी जल की आपूर्ति समुचित नहीं हो पाती है। यद्यपि कि सभी नगर पंचायतों, नगर पालिकाओं और नगर महापालिकाओं द्वारा सुरक्षित पेयजल की आपूर्ति के प्रयास लगातार किए जाते रहते है। इसके लिए विभिन्न नगरों में ओवरहेड टैंक, इण्डिया मार्का हैण्डपम्प और व्यक्तिगत नल की व्यवस्था की गई है। फिर भी नगरों के नागरिकों को सुरक्षित पेयजल की प्राप्ति नहीं हो पा रही है। नगर

पालिकाओं द्वारा इस हेतु लगातार प्रयास किए जा रहे है।

4. विद्युत, ईंधन एवं संचार आदि की समस्याएँ :–

ऊर्जा की सतत आपूर्ति नगरों की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसके द्वारा ही नगरीय क्षेत्रों की विविध आवश्यकताएं पूरी होती है और कृषि तथा औद्योगिक उत्पादन सम्भव होता है। किसी क्षेत्र के त्वरित विकास हेतु विद्युतीकरण मूलभूत अवस्थापनात्मक तत्व के अन्तर्गत आता है। नगरों में विविध कार्यों के लिए लकड़ी, कोयला, गैस, किरोसीन और बिजली का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता है। ईंधन की आवश्यकता दो प्रकार की होती है। प्रथम कल–कारखानों को चलाने के लिए द्वितीय घरों में भोजन पकाने व प्रकाश के लिए। कल कारखानों में तो अधिकांश ईंधन की आपूर्ति कोयले द्वारा हो जाती है परन्तु सबसे बड़ी समस्या हैं घरों में ईंधन की।

अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरों में ऊर्जा का मुख्य स्रोत विद्युत है। विद्युत के अतिरिक्त ऊर्जा के अन्य साधनों में कोयला, पेट्रोल, डीजल, किरोसिन और लकड़ी है। इस क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति अनपरा ताप विद्युत गृह से की जाती है। अनपरा (सोनभद्र जनपद) से 400 के0वी0 विद्युत की आपूर्ति साहूपुरी (सारनाथ) में होता है। तथा साहूपुरी से 400 के0वी0 विद्युत आपूर्ति निचला गंगा घाघरा दोआब में होती है।

निचला गंगा–घाघरा दोआब में विद्युत उपभोग के स्तर के माप हेतु आधुनिक उपभोग की वस्तुओं को आधार बनाया गया है। इससे अध्ययन क्षेत्र में विद्युत के उपभोग का स्तर प्रति परिवार स्पष्ट है। जिसे तालिका से स्पष्ट किया गया है।

5. स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की समस्याएँ :–

शिक्षा की कमी और वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण ही विकास और स्वास्थ्य के बीच एक प्रभावशाली सह–सम्बन्ध पाया जाता है। कम विकसित देशों में स्वास्थ्य समस्याएं अपेक्षाकृत निम्न स्तरीय होता है। अल्प विकसित देशों में स्वास्थ्य समस्याएं अपेक्षाकृत जीवन स्तर के निम्न होने के कारण बढ़ जाती है। कम विकसित देशों में जो लोग बीमार पड़ते है, उनका डाक्टरों व अस्पताल तक पहुॅचना कठिन होता है। ऐसे देशों में नगरों की बढ़ती हुई जनसंख्या तथा सुव्यवस्थित आवास तथा रोजगार न मिलने के कारण नगर के अन्तर्गत रहने वालों का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रह पाता, जिससे नगर में मरीजों की संख्या बढ़ती जाती हैं इन मरीजों के इलाज की व्यवस्था नगर के अन्तर्गत अस्पताल में होती है परन्तु नगर के अन्तर्गत न तो उतने अस्पताल है और न उसमें इतनी क्षमता है। इस कारण नगर के सभी मरीजों का इलाज संतोषप्रद नहीं हो पाता है। भारतीय नगरों में सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधा की कमी के कारण निजी अस्पतालों एवं नर्सिग होम को

बढ़ावा दिया गया है जहॉ केवल साधन सम्पन्न वर्ग ही स्वास्थ्य खर्च वहन कर पाता हैं नगरों में ग्रामीण जनसंख्या भी पर्याप्त संख्या में स्वास्थ्य सुविधा के लिए आती है जिसके कारण चिकित्सा संस्थाओं पर भीड़ बढ़ती जा रही है। अध्ययन क्षेत्र की ग्रामीण जनसंख्या प्रधानतः चिकित्सा सेवाओं हेतु नगरीय क्षेत्रों पर आश्रित है।

स्वास्थ्य सुविधाओं की पर्याप्त उपलब्धता नहीं होने तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र होने के कारण यहॉ के ज्यादेतर लोग इलाज नहीं करा पाते हैं। इस दोआब क्षेत्र में वाराणसी एवं मऊ स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रमुख केन्द्र है। स्वास्थ्य सुविधा अच्छी नहीं होने के कारण बलिया के लोग मऊ में रोगों का इलाज कराने के लिए जाते है। निचला गंगा–घाघरा दोआब के प्रत्येक जनपद में स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय है।

6. जल निकासी की समस्याएँ :–

जल निकासी की समस्या नगरों में दो प्रकार की होती है। पहली मलजल निकासी और दूसरी वर्षा जल निकासी की। नगर में सभी वस्तुओं का प्रयोग होता है। जिससे विसर्जन भी काफी मात्रा में होता है और उसे बहुत सी गन्दगियों से मुक्त होना पड़ता है। कारखानों के द्वारा जो जल का प्रयोग किया जाता है, उसे पुनः जमीन के अन्दर भेज दिया जाता है या

नदियों में लौटा दिया जाता है। मल–स्राव से जल विषैला हो जाता है और इसके विसर्जन की समस्या बहुत ही गंभीर हैं दुर्भाग्यवश भारतीय नगरों में प्रायः नाले–नालियाँ खुली होती हैं जिसके कारण आस–पास की बस्तियाँ बहुत ही अस्वास्थ्यकर हो जाती है और तरह–तरह की बीमारियाँ नालों के नजदीक के मुहल्लों में फैलती रहती है।

यातायात की समस्याएँ :–

नगरीय जीवन की उत्कृष्टता, सहज और सुव्यवस्थित गमनागमन में निहित होती है। क्योंकि कार्य सम्पादन में इसकी अहम् भूमिका होती हैं नगरीय यातायात सुविधा की तुलना में जब उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ने लगती है तो गमनागमन बाधित होने लगता है। सड़कों पर जब क्षमता से अधिक वाहन गतिमान होते है तो सड़क जाम की समस्या यात्रा को बाधित करती है। नगरों में मोटर वाहनों की बढ़ती भीड़ विश्वव्यापी समस्या बन गई है। भारतीय नगरों में एक दूसरी समस्या यह भी है कि प्रायः नगर के बीच या वाह्य भाग में सड़के व रेल मार्ग एक दूसरों को आर–पार (क्रासिंग) एक ही तल पर काटती है। फलस्वरूप रेलगाड़ियों के आने से काफी पहले (क्रासिंग) इस मार्ग को बन्द कर दिया जाता है जिससे क्रासिंग के दोनों ओर काफी देर तक भीड़ जमा हो जाती है।

निचला गंगा–घाघरा दोआब के रेल मार्गों की अभिगम्यता की दृष्टि से देखा जाय तो वाराणसी–मऊ तथा बलिया के निकट आवागमन सबसे अधिक हैं इन क्षेत्रों में गाड़ियों की कमी मिलती है। निचला गंगा–घाघरा दोआब का पूर्वी भाग मऊ तथा बिल्थरारोड एवं आजमगढ़ का मध्यवर्ती भाग तथा वाराणसी, औड़िहार एवं केराकत का क्षेत्र रेल मार्गों की दृष्टि से सबसे अधिक अभिगम्य है इस क्षेत्र में रेलवे स्टेशनों की संख्या 81 है।

स्मरणीय यह है कि अध्ययन क्षेत्र में बलिया, मऊ, आजमगढ़, औड़िहार–वाराणसी रेलवे स्टेशनों से द्रुतगति से चलने वाली रेलगाड़ियाँ देश के कोने–कोने तक जाती है परन्तु इन गाड़ियों में इतनी अधिक भीड़–भाड़ रहती है कि लोगों को यात्रा में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान समय में निचला गंगा–घाघरा दोआब के पक्की सड़कों की लम्बाई में काफी वृद्धि हुई है क्योंकि अधिकांश चौड़ी कच्ची सड़के पक्की सड़कों के रूप में परिवर्तित कर दी गई है। परन्तु आज भी गांवों को नगरों से जोड़ने वाली अधिकांश सड़के कच्ची सड़कों के ही रूप में ही मिलती है। जिससे लोगों को आवागमन में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र में कुछ ऐसे भी क्षेत्र है जहॉ पर बाढ़ के कारण प्रति वर्ष सड़के क्षतिग्रस्त हो जाती है। यह क्षेत्र गंगा और घाघरा नदियों के किनारों पर बसे हुए गांवों के समीपवर्ती क्षेत्रों की सड़कें है।

Airo International Research Journal
Volume XII, ISSN: 2320-3714
August 2017
Impact Factor : 0.75 to 3.19
UGC Listed (Approved Number Number 63012)

पर्यावरणीय प्रदूषण एवं पर्यावरणीय अवनति की समस्याएँ :–

प्रदूषण आधुनिक नगरों के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है, जिस पर यदि समय रहते नियन्त्रण नही किया गया तो समस्त नगरीय सभ्यता के अस्तित्व को समाप्त कर सकता है। यह प्रदूषण नगरों में उद्योगों के जमघट, खनिज तेल आधारित वाहनों की बढ़ती संख्या, नगरों में जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि, नगर वासियों में उपभोक्तावादी संस्कृति के तीव्र विकास, नगर और उसके समीपवर्ती भागों में पेड़–पौधों का विनाश, नगरों की विलासितापूर्ण जीवन पद्धति, प्लास्टिक आदि पदार्थो के बढ़ते प्रयोग, नगरवासियों के कम पर्यावरण बोध एवं नागरिक संस्थाओं तथा सरकारी तन्त्र के प्रदूषण नियन्त्रण पर विफलता आदि के कारण हैं। इस प्रदूषण में वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण एवं जल प्रदूषण आदि प्रमुख है। जिनका नगरवासियों और जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

ध्वनि प्रदूषण :–

जब ध्वनि की तीव्रता इतनी बढ जाय की वह कर्णप्रिय न रह जाय तो उसे शेर या ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है। आज के यांत्रिक युग में उद्योग धन्धों एवं वाहनों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही हैं जिससे मशीनों एवं वाहनों का कोलाहल बढ़ता जा रहा है। ध्वनि प्रदूषण नगरीय संस्कृति की देन

है। महानगरों में चलने वाले वाहन (ट्रक, बस, कार, टेम्पो, स्कूटर, रेलगाड़ी, आदि) एवं वायुयान, औद्योगिक क्षेत्रों में मशीनों और साइरनों की आवाजें, व्यस्त बाजारों में विक्रेताओं के शोर, रेडियों, टी0वी0 एवं लाउडस्पीकर, धार्मिक एवं सामाजिक क्रियाएं इनके प्रमुख स्रोत है। अनेक अध्ययनों से यह तथ्य प्रकट होता है कि उच्च यातायात घनत्व और औद्योगिक विशेषता वाले महानगरों में ध्वनि एक बड़ा संत्रास हैं नगर के विभिन्न भागों में इस तरह स्थान, समय, जनसंख्या घनत्व कार्यात्मक संरचना आदि से प्रभावित होता है। अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरों में औद्योगिक ईकाइयों की स्थापना, वाहनों की संख्या में वृद्धि आदि तथ्यों ने प्रदूषण की स्थिति को बढ़ाया है।

अध्ययन क्षेत्र में प्रति चयन सर्वेक्षण के आधार पर किये गये अध्ययन से स्पष्ट है कि निचला गंगा–घाघरा दोआब के नगरीय क्षेत्रों में 35 प्रतिशत लोगों के अनुसार ध्वनि प्रदूषण है। नगरीय क्षेत्रों में ध्वनि के प्रमुख स्रोतों में 59 प्रतिशत घरेलू, 10 प्रतिशत उद्योग, 11 प्रतिशत वाहन, 06 प्रतिशत लाउडस्पीकर, 06 प्रतिशत अन्य स्रोत है। विभिन्न नगरों के स्तर पर सर्वाधिक 46 प्रतिशत लोगों ने ध्वनि प्रदूषण को आजमगढ़ नगर में स्वीकार किया गया है। प्रमुख प्रदूषकों में 78 प्रतिशत मऊनाथभंजन नगर एवं अमिला नगर, 15 प्रतिशत वाराणसी एवं आजमगढ़ नगर, 18 प्रतिशत फूलपुर एवं मुहम्मदाबाद, लाउडस्पीकर से 9 प्रतिशत मऊनाथभंजन एवं रसड़ा में तथा अन्य स्रोतों में 8

प्रतिशत मऊनाथभंजन नगर में प्रमुख है।

वायु प्रदूषण :–

नगरों में खनिज तेल आधारित वाहनों से निःसृप्त धुँआ,उद्योगों की चिमनियों से निकलने वाली गैसे एवं धूल कण,सड़ते हुए कूड़ा–करकट और मालवा से उत्पन्न मैले,रिफ्रीजरेशन प्रणाली से उत्पन्न क्लोरो फ्लोंरों कार्बन गैसे आदि वायु प्रदूषण के प्रमुख कारक है। वायु प्रदूषण के अन्य कारणों में रसायनों का छिडकाव और खेती के लिए अतिरिक्त जमीन जुटाने के लिए वनों, झाड़ियों और घास में आग लागा कर साफ करना भी सम्मिलित है। चूंकि निचला गंगा घाघरा दोआब एक वन विहीन कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहाँ पर अत्यधिक मात्रा में कृषि कार्य हेतु दवााओं का प्रयोग किया जाता है। जिससे प्रदूषण दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा हैं।

अध्ययन क्षेत्र निचला गंगा घाघरा दोआब में वायु प्रदूषण की स्थिति की जानकारी हेतु शोधार्थी द्वारा विभिन्न नगरों में प्रतिदर्श अध्ययन किया गया है जिससे प्राप्त स्थिति तालिका से स्पष्ट है।

तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के 37 प्रतिशत लोगो ने वायु प्रदूषण की स्थिति को स्वीकार किया है। सारणी के अनुसार वायु प्रदूषण के मुख्य स्त्रोतों में 36 प्रतिशत घरेलू, 33 प्रतिशत वाहन, 20 प्रतिशत उद्योग एवं

9 प्रतिशत लोगों द्वारा अन्य स्त्रोतों को नगरों में वायु प्रदूषण का मुख्य स्त्रोत माना है। नगरीय स्तर पर निचला गंगा घाघरा दोआब के विभिन्न नगरों में वायु प्रदूषण की स्थिति को स्वीकार करने वालों की संख्या में अन्तर मिलता है। मऊ नाथ भंजन नगर के 50 प्रतिशत लोगों ने स्वीकार किया है कि वायु प्रदूषण है, जबकि कुर्थीजाफरपुर नगर के 23 प्रतिशत लोगों ने वायु प्रदूषण की स्थिति को स्वीकार किया है। वायु प्रमुख स्त्रोतों की दृष्टि से वाराणसी में घरेलू स्त्रोत, उद्योग में जंगीपुर वाहन , का रेवती,मेहनगर और वाराणसी नगर के अन्य स्त्रोतों में सबसे आगे है।

कूड़ा–करकट एवं मल–मूत्र विसर्जन की समस्याएँ :–

कूड़ा–करकट उन पदार्थों को कहते है जिन्हें उपयोग के बाद बेकार या निरर्थक मानकर फेंक दिया जाता है जैसे– जंग लगी पिन, टूटे काँच के समान, प्लास्टिक के डब्बे, पालीथीन के थैले, टिन के डब्बे और कनस्तर, पुराना कागज, राख, घरेलू कूड़ा–करकट आदि। इन्हें अवपशिष्ट, कचरा, कूड़ा, ठोस अपशिष्ट आदि कई नामों से जाना जाता है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण और नगरीकरण के कारण ठोस अपशिष्ट पदार्थों की मात्रा में बेतहाशा वृद्धि हुई है तथा इनका संग्रहण और निपटान एक बहुत बड़ी समस्या बन गई है जिससे पर्यावरण को गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है। नगरों में ठोस अपशिष्टों की बढ़ती मात्रा यहाँ की भौतिकवादी एवं

उपभोक्तावादी समाज की देन है। इनमें पश्चात्य जगत की ''प्रयोग करो और फेंकों संस्कृति'' ने उत्प्रेरक का कार्य किया है। बढ़ती जनसंख्या और उसके बढ़ते घनत्व के कारण आधुनिक नगरों में स्थान–स्थान पर गन्दगी और कूड़े–कचरे के ढेर नजर आ रहे है। ऐसे में लोगों को स्वस्थ्य जीवन जीना दूभर हो गया है। यह कूड़ा–कचरा केवल गन्दगी ही नही फैलता है, वरन अनेक गम्भीर रोगों का वाहक भी बनता है। मलेरिया, हैजा, आँत्रशोथ आदि अनेक बिमारियाँ गन्दगी की वजह से महामारी का रूप धारण कर लेती है। यद्यपि अनेक नगरों में कचरा निपटान के भराव स्थल बनाये गये है लेकिन वह पर्याप्त नही है।

नगरों के विभिन्न कार्यों के लिए बड़ी मात्रा में जल के उपयोग से काफी मात्रा में अपशिष्ट जल का निर्माण होता है। इसका निकास और निस्पादन नगर पालिकाओं के लिए एक प्रमुख समस्या है। मल–जल निकास की समुचित व्यवस्था के अभाव में यह जल नगर के खुले स्थानों में इकट्ठा होता रहता है अथवा खुली नालियों से प्रवाहित होता है जो धरातलीय जल स्रोतों को प्रदूषित करता रहता है। इससे नगर वासियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। निचला गंगा–घाघरा दोआब क्षेत्र में विभिन्न नगरों से जल–मल नालों के द्वारा गंगा,घाघरा,टोंस नदियों एवं विभिन्न तालों में बहा दिया जाता है। जिससे प्रदूषण बढ़ जाता है। गंगा एवं घाघरा नदियों का

पानी पीने के योग्य भी नहीं रह गया है। अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरो में कूड़ा–करकट एवं मल–मूत्र विसर्जन की स्थिति का अध्ययन प्रति चयन के आधार पर किया गया है। जो तालिका से स्पष्ट है।

विभिन्न नगरों में कूड़ा–करकट की समस्या में भिन्नता मिलती है। सर्वाधिक खुले में घरेलू कचरे का सैदपुर (81 प्रतिशत) नगर में, बन्द डिब्बे में कचरे का सर्वाधिक विस्तारण सहतवार,रेवती,अतरौलिया एवं सरायमीर (32 प्रतिशत) हैं। बलिया एवं दोहरीघाट में सबसे अधिक मात्रा में कचरे का संग्रह नहीं किया जाता है।

अन्य समस्याएँ :–

नगर की अन्य समस्याओं में खुली भूमि का अभाव, शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्या, अनियोजित भूमि उपयोग की समस्या आदि प्रमुख है। अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरों में खुली भूमि का अभाव मिलता है। इसमें सबसे अधिक खुली भूमि का अभाव वाराणसी में मिलता है। अध्ययन क्षेत्र के लगभग सभी नगर शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्या और अनियोजित भूमि उपयोग की समस्या से ग्रस्त है। नगरों में पार्क, खेल के मैदान के अनियोजित भूमि उपयोग के कारण जल भराव के परिणामस्वरूप नगरों को स्वास्थ्य को बनाये रखने में कठिनाई होती है।

निचला गंगा–घाघरा दोआब के नगरों की अन्य समस्याओं में खुली भूमि का अभाव,शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्या,अनियोजित भूमि उपयोग की समस्या आदि प्रमुख है। अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरों में खुली भूमि का अभाव मिलता है। इसमें सबसे अधिक भूमि का अभाव मऊनाथ भंजन नगर, बलिया,वाराणसी एवं आजमगढ़ में मिलती हैं। अध्ययन क्षेत्र के लगभग सभी नगर शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्या से और अनियोजित भूमि उपयोग की समस्या से ग्रस्त है। नगरों में पार्क,खेल के मैदान के अनियोजित भूमि उपयोग के कारण जल प्रदूषण के परिणामस्वरूप नगरों के स्वास्थ्य को बनाये रखने में कठिनाई होती है।

उपर्युक्त समस्याएँ इस बात की ओर संकेत करती है कि निचला गंगा–घाघरा दोआब के नगरों का न केवल पुनरूद्धार किया जाए वरन नये नगरों को योजनाबद्ध प्रणाली के अन्तर्गत बसाया जाये। नगरों को विशाल आकार से परिवर्तित होने से रोका जाये। इसके साथ–साथ नगरों का निर्माण करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाये –

नगर निर्माण के पूर्व आयोजनाओं का चयनः–

1. निचला गंगा–घाघरा दोआब में नगर–निर्माण सम्बन्धी योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर अधिनियम बनाया जाये।

2. नगरों के वायु मण्डल को दूषित होने से रोका जाये। उद्योगों को नगर से बाहर ऐसे स्थानों पर हवा के विपरीत दिशा में बसाया जाये, जिससे उसका धुँआ व दुर्गन्ध नगर में न प्रवेश कर सके। कोयले एवं लकड़ी के स्थान पर गैस का प्रयोग घरों में इंधन के रूप में बढ़ाया जाये। वाहनों के शोर–शराबे से निवास स्थानों को दूर बसाया जाये। प्रमुख सड़क मार्गों के सहारे निवास स्थानों का निर्माण न किया जाये।

3. सूर्य का प्रकाश तापक्रम तथा वर्षा सम्बन्धी दशाओं की पूर्ण जानकारी प्राप्त करके ही मकानों को बनाया जाय।

4. निचला गंगा–घाघरा दोआब में नगरों का ढॉचा नगरवासियों की सामाजिक आर्थिक दशाओं के अनुरूप होना चाहिए।

5. निचला गंगा–घाघरा दोआब पुराने नगरों का पुर्न निर्माण हो, विशेष रूप से वाराणसी, मऊ, बलिया आजमगढ़, जौनपुर, केराकत, रसड़ा, एवं मुबारकपुर नगर के मध्यवर्ती भाग को फिर से बसाया जाये जहॉ पर अत्यधिक भीड़–भाड़ हो गई है। अनियोजित तरीके से बसे क्षेत्रों का पुर्ननिर्माण किया जाये। गन्दी बस्तियों की सफाई की जाये।

6. निचला गंगा–घाघरा दोआब के समस्त नगरों में सड़कों और नालियों का विकास ठीक प्रकार से किया जाय। यातायात व्यवस्था को इस

प्रकार से व्यवस्थित किया जाय कि सभी प्रकार के वाहन सड़कों पर बिना किसी को क्षति पहुँचायें तथा गति को बनाये रख कर विचरण कर सकें। भारी वाहनों के लिए रिंग बाँध का विकास किया जाये। अध्ययन क्षेत्र के वाराणसी जैसे महानगर में भूमिगत रेलमार्गों का विकास किया जाय तथा आवश्यकता हो तो खम्भों पर सड़कों एवं रेल मार्गों की स्थापना की जाये।

नगरों को वर्तमान समाज की आवश्यकता के अनुरूप बनाया जाये। नगरों की व्याख्या करते हुए ममफोर्ड ने कहा हैं कि –

"अपने पूरे अर्थ में नगर एक भौगोलिक इकाई है, एक आर्थिक व्यवस्था है, एक औद्योगिक प्रसारण है; सामाजिक कार्य का नाट्य स्थल और सामूहिक एकता का सुन्दर समन्वय तथा चिन्ह है।"

इस प्रकार निचले गंगा–घाघरा दोआब की समस्याओं के अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ पर व्याप्त प्राचीन नगरीय केन्द्रों की स्थिति समय के अनुरूप सुव्यवस्थित न होने के कारण अनेक समस्याओं का नगरों के द्वारा सामना किया जा रहा है जिसे आज के वर्तमान परिवेश में सुनियोजित ढंग से सरकार तथा स्वयं सेवी संस्थाओं के फलस्वरूप इन समस्याओं को दूर किया जा सकता हैं।

Airo International Research Journal
Volume XII, ISSN: 2320-3714
August 2017
Impact Factor : 0.75 to 3.19
UGC Listed (Approved Number Number 63012)

भारत एवं उत्तर प्रदेश सरकार ने नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि तथा उसे उत्पन्न नगरीय समस्याओं को ध्यान में रखते हुए अपनी जनसंख्या नीति के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रमों को प्रारम्भ किया है। State Plan on Action on Nutrition, Javani Suraktha Yojana, Jawaharlal Nehru National Urban Revewal Mistion, Valmiks Ambedker Awas Yojana, Integrated develpoment of Small and Medium Towns, Accelerated Urban Water Supply Programme vkfnA नगरीय क्षेत्रों में बढ़ती जनसंख्या को विशेष रूप से गरीब जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा के लिए भी योजनाएँ लागू की गयी हैं जैसे अन्त्योदय योजना, अन्नपूर्णा योजना, आदि। संविधान के 75वें संशोधन के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं को भी सशक्त किया गया है।

उत्तर प्रदेश के ऑकड़े कहते हैं कि नगर में रहने वाले दस लोगों में तीन गरीब है। स्वाभाविक है कि उनकी स्वास्थ्य स्थितियाँ भी खराब होंगी तथा अधिवास समस्या भी होगी। अगले अध्याय में जब सामाजिक–सास्कृतिक आधार पर पूरे निचला गंगा–घाघरा दोआब क्षेत्र के नगरीय क्षेत्रों को कुछ मानकों के आधार पर सीमांकन करेंगे तो नगरीय स्थिति और अधिक उद्घाटित होगी।

भारतीय समाज में तीव्र गति से परिवर्तन होने के साथ नगरीकरण भी तेजी से हो रहा है। भारत की लगभग 1 अरब जनसंख्या में 74 करोड़ लोग

ग्रामीण क्षेत्र में तथा 28 करोड़ लोग नगरीय क्षेत्रों में रहते है। नगरीय जनसंख्या 31.2 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। यदि नगरीय जनसंख्या को एक अलग देश या प्रदेश मान लिया जाये तो उसकी संख्या चीन, भारत तथा अमरीका के अतिरिक्त विश्व में चौथी सबसे बड़ी जनसंख्या होगी। संयुक्त राष्ट्र संघ के भविष्योन्मुख ऑकड़ों के अनुसार 2030 तक भारत में नगरीय जनसंख्या 57 करोड़ हो जायेगी जो भारत की जनसंख्या का 40 प्रतिशत हो जायेगी।[1] सम्भवतः इसी तथ्य के प्रति सचेत करते समय भारत के राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने कहा कि ग्रामीण से नगरीय क्षेत्रों में होने वाले पलायन को रोकना होगा। उन्होंने गॉव के शहरी विकास की बात कही थी।

2001 की जनगणना में 35 ऐसे शहर हैं जिनकी जनसंख्या 10 लाख से अधिक है। 393 शहर ऐसे हैं जिनकी जनसंख्या 1 लाख से अधिक है। 2021 तक ऐसे शहरों की संख्या 500 से अधिक होगी।[2]

सबसे अधिक चिन्तनीय तथ्य यह है कि भारत के नगरीय क्षेत्रों में गरीब जनसंख्या में भी वृद्धि हो रही है। रोजगार की तलाश में लोग नगर क्षेत्र में आ जाते हैं तथा रोजगार पाकर भी उनका जीवन स्तर उठ नहीं पाता हैं।

भारत तथा उत्तर प्रदेश के प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में नगरीय सुविधायें एवं

ढॉचा ऐसा नही है कि इस बढ़ती जनसंख्या को जीवन–गुणवत्ता प्रदान कर सके। विश्व में मनुष्य के जीवन को खतरे में डालने वाले कारकों में नगरीय सुविधाओं का अभाव भी है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के सघन क्षेत्रों में से एक है। चूँकि यह प्रदेश एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहॉ 2/3 से भी अधिक आबादी कृषियेत्तर कार्यो में लगी हुई है। इस सम्पूर्ण प्रदेश की जनसंख्या वर्ष 2001 के जनगणना के अनुसार 14511021 है जो कुल उ0प्र0 की जनसंख्या का 8. 37 प्रतिशत भाग है। इस दोआब में सबसे अधिक जनसंख्या आजमगढ़ जनपद में 3939916 निवास करती है। जहॉ पर जनसंख्या घनत्व 974 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। आजमगढ़ जनपद में सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व सगड़ी तहसील में है जहॉ पर 1372 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 निवास करते है। तत्पश्चात निजामाबाद तहसील में जनसंख्या घनत्व 1011 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 जनसंख्या मिलती है। यहॉ पर उपलब्ध भूमि एवं जनसंख्या के अनुपात में भारी अन्तर मिलने के कारण नगरीय केन्द्रों का विकास कम ही हुआ है। अध्ययन क्षेत्र के जनपद मऊ की कुल जनसंख्या 1853997 हैं मऊ का जनसंख्या घनत्व 1082 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है

मऊ घोसी, आजमगढ़, निजामाबाद प्रदेश एक वृहद सामाजिक, सांस्कृतिक, नगरीय क्षेत्र है जहॉ पर साक्षरता दर 57.44 प्रतिशत, अनुसूचित

जाति की संख्या 13.35 प्रतिशत, नगरीय क्षेत्रों में काम करने वाले कुल कर्मियों की संख्या 35.25 प्रतिशत, पारिवारिक उद्योग कर्मियों की संख्या 54. 04 प्रतिशत, स्त्री–पुरूष अनुपात 954, मकानों में उपलब्ध रसोईघर 66.68 प्रतिशत एवं मकानों में उपलब्ध स्नानगृह 47.81 प्रतिशत है **जो सम्पूर्ण निचला गंगा–घाघरा दोआब के सामाजिक–सांस्कृतिक नगरीय क्षेत्रों के विकसित प्रदेशों में से एक है एवं सबसे पिछड़ा सामाजिक–सांस्कृतिक नगरीय क्षेत्र, बॉसडीह, सिकन्दरपुर, बिल्थरारोड का प्रदेश है** जहॉ पर कुल साक्षरता दर 52.11 प्रतिशत, अनुसूचित जाति की संख्या 9.93 प्रतिशत कुल नगरीय क्षेत्रों में काम करने वाले लोगों की संख्या 10.15 प्रतिशत, पारिवारिक उद्योग कर्मियों की संख्या 58.41 प्रतिशत लिंगानुपात 863 मकानों में उपलब्ध रसोईघर 44.18 प्रतिशत, मकानों में स्नानगृहों की संख्या 28.36 प्रतिशत है। जो निचला गंगा–घाघरा दोआब में अल्पविकसित सामाजिक–सांस्कृतिक नगरीय क्षेत्र को इंगित करता है। इसके अतिरिक्त जखनिया–सैदपुर–गाजीपुर भी अल्प विकसित क्षेत्र है। बुढ़नपुर–फूलपुर एवं वाराणसी अर्द्ध विकसित क्षेत्र है। यदि इन प्रदेशों को तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि जहॉ **आजमगढ़** परिक्षेत्र में साक्षरता दर 57.44 प्रतिशत है। वहीं **बॉसडीह, सिकन्दरपुर, बिल्थरारोड** में यह 52.11 प्रतिशत है जो नगरीय केन्द्रों अनुसूचित जाति की संख्या के निर्धारण में स्पष्ट रूप से एक

दूसरे से अलग दृष्टिगोचर होते है।

इस प्रकार, आज का मानव समाज औद्योगिक एंव प्रौद्योगिक क्रान्तियों के साथ–साथ नगरीय क्रान्ति के दौर से गुजर रहा है। यही कारण है कि विश्व में नगरीकरण के साथ–साथ नगरों की संख्या में वर्तमान सदी के उत्तरार्द्ध में तीव्र वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में नगरों के क्षेत्रफल में प्रतिदिन विस्तार होता जा रहा है।[3] तथा उनके अन्तर्गत बहुत बड़े क्षेत्र में भवन–निर्मित होते जा रहे है। नगर का विकास इतनी शीघ्रता से और अनियमित होता जा रहा है कि उसे पूरी तरह योजनाओं के अनुरूप नहीं बसाया जा सका है। जिससे आज नगरों को सामाजिक–आर्थिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से अभिशापित माना जाने लगा है क्योंकि नगरों की उत्पत्ति एवं विकास अनियोजित रूप से हुआ हैं आज नगरों में भूमि का अभाव और भू–मूल्य, मकानों का अभाव और उनका अधिक किराया होता जा रहा है।

नगरों के विकास के साथ–साथ उन्हें अनेक ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिनकी पहले कभी चिन्ता तक न थी। जैसे– जल की पूर्ति, नगर की सफाई, यातायात व्यवस्था, आवश्यक उपयोगी सुविधायें इत्यादि। जैसे–जैसे नगरों की जनसंख्या में वृद्धि होती जाती है, वैसे–वैसे इन सुविधाओं कों और अधिक जुटाने में आवश्यकता बढ़ती जाती है। इनकी

कमी होने पर नगर में अनेक समस्याएँ पैदा हो जाती है।[4] बड़े–बड़े नगरों में ये सामाजिक बुराईयॉ विकराल रूप धारण कर लेती है। इनमें गन्दी बस्तियॉ, निवास स्थानों का अभाव, बेरोजगारी की समस्या कारखानों में कार्य सम्बन्धी असन्तोषजनक दशाएँ, आमोद–प्रमोद तथा स्वास्थ्य सेवाओं की कमी पाई जाती है।[5] भोजन सम्बन्धी वस्तुएँ शुद्ध नहीं मिलती, सामाजिकता का अभाव मिलता है। सामाजिकता तथा शिष्टाचार केवल समान कार्य करने वाले में ही होता है। जिसे संघो द्वारा सदैव बनाकर रखने का प्रयास किया जाता है।[6]

ममफोर्ड के शब्दों में – ''**एक बड़ा नगर आर्थिक दृष्टि से अवांछनीय, राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर, जैविक दृष्टि से पतन की ओर उन्मुख तथा सामाजिक दृष्टि से असन्तोषजनक होता है।**

प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि वह नगर के मध्य भाग के समीप रहे क्योकि वहॉ पर लगभग सभी सुविधाओं का जमाव पाया जाता है। नगर के केन्द्र में व्यावसायिक प्रतिष्ठान अपना पॉव जमाकर रिंहाइशी क्षेत्रों को पीछे धकेलते जाते है। इस प्रकार जैसे–जैसे व्यावसायिक क्षेत्र विकसित होता जाता है, वैसे–वैसे निवास क्षेत्र व्यावसायिक क्षेत्र को घेरते हुए नगर की सीमाओं का विस्तार करते चले जाते है। निवास क्षेत्र के पीछे हटने के साथ ही साथ पानी तथा रोशनी का प्रदाय क्षेत्र बढ़ता जाता है। नगर की इस

अवस्था में बहुधा पुराना व्यावसायिक केन्द्र अपना महत्व खो बैठता है, नगर की सीमाओं का विस्तार होता है, परन्तु उसका हृदय स्थल कमजोर पड़ जाता है।

विकसित देशों में बहुत से नगरों का विकास रूक गया है। केन्द्रभिमुखी शक्ति के कारण नगर बाहर की ओर फैलते जा रहे है। विकासशील देशों में जहॉ नगरीय विकास अभी आरम्भिक अवस्था में है, नगरों में अनेक समस्याऍ अभी से उभरकर ज्वलन्त रूप में सामने आ गई है।[7] प्रश्न यह उठता है कि यह समस्याऍ क्यों पैदा हो गई है? इसके कारण यह भी हो सकते हैं – नगरों के आकार एवं उनके घनत्व में भारी वृद्धि का होना, नगरों के अपने समीपवर्ती क्षेत्र पर दैनिक आवश्यक सामग्री के लिए जैसे– दूध, साग–सब्जी, अनाज, आदि के लिए बढ़ती हुई निर्भरता, नगरीय सुविधाओं का तेजी से विकास न किया जाना, आर्थिक साधनों की कमी, नगरों को व्यवस्थित रूप से न बसाया जाना आदि।[8]

नगरों की समस्याओं को स्पष्ट करते हुए डॉ0 गरमीला ने लिखा है कि **''एक सीमित भूमि पर एक वृहद् जन समूह के निवास करने से कई समस्याएं एक साथ उठ खड़ी होती है। इनमें सबसे बड़ी समस्या स्थान की है जो अनेक प्रकार के नगरीय भूमि–उपयोगों,आवास, व्यवसाय, यातायात तथा अन्य**

सामाजिक कार्यों में लाया जाता है।[9] रामचन्द्र तिवारी ने नगरीय समस्याओं को दो वर्गो में बांटा है : प्रथम – नगर के भीतर की समस्याएं, जिसमें नगर की प्रशासनिक सीमा के अन्तर्गत रहने वाला क्षेत्र या उस पर निवास करने वाले लोग प्रभावित होते है। द्वितीय – नगर के बाहर की समस्याएं, जिसमें नगरीय उपान्त या प्रभाव क्षेत्र अथवा उसके नागरिक प्रभावित होते है। नगरों की आन्तरिक समस्याओं में स्थान की समस्या, आवासीय समस्या, परिवहन की समस्या, जलापूर्ति की समस्या, प्रदूषण की समस्या, कूड़ा–करकट–मलमूत्र विसर्जन की समस्या, विद्युत एवं ईधन आपूर्ति की समस्या, प्रशासकीय प्रबन्ध की समस्या आदि प्रमुख है।[10]

पिछली सदी में तीव्र नगरीकरण के कारण नगरों में ऐसी समस्याओं का जन्म हुआ है जिसके सम्बन्ध में पहले कोई सोचा भी नही था। आज विश्व स्तर पर अनेक नगरीय समस्याएं विभिन्न रूपों में नगरीय जीवन को प्रभावित करने लगी है। ऐसी समस्याओं के कारण नगरों में क्षमता से अधिक जनसंख्या का संकेन्द्रण है। नगरों में अत्यधिक जनसंख्या संकेन्द्रण से अनेक प्रकार की समस्याओं का उदय होता और उनके समाधान के प्रति सार्थक प्रयास न होने के कारण भारत जैसे विकासशील देशों में नगरीय जीवन कठिनाइयों से घिरता जा रहा हैं। नगरों की बढ़ती विशालता और घटती नगरीय जीवन की गुणवत्ता के कारण अब विद्वानों को सोचने के लिए बाध्य

होना पड़ रहा है कि इस प्रवृत्ति को कैसे नियन्त्रित किया जाय, ताकि बढ़ती नगरीय समस्याओं को कम किया जा सके।

1. भूमि उपयोग सम्बन्धी समस्याएँ :–

नगरों में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, उनमें कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों की प्रधानता, उनकी बढ़ती समृद्धि आदि के कारण उनमें आवास, उद्योग, यातायात, वाणिज्य आदि कार्यो के लिए भूमि की मॉग उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। इससे एक तरफ जहॉ स्थान कमी की समस्या का अविर्भाव होता है, वहीं दूसरी तरफ भूमि के बढ़ते मूल्य, नगरीय घनत्व में वृद्धि, गगनचुम्बी इमारतों के निर्माण, कमजोर और कम आय वर्ग वाले नगरवासियों का सस्ते भूमि मूल्य वाले क्षेत्रों की ओर प्रवास, मलिन बस्तियों के निर्माण, नगर के भौतिक सामाजिक पर्यावरण में गिरावट, कृषि भूमि का अतिक्रमण, ग्रामीण पर्यावरण पर बढ़ते दबाव आदि की प्रवृत्तियाँ अपना कुप्रभाव बढाने लगती है। नगरों में अनियोजित भूमि उपयोग, अनेक नगरीय समस्याओं का कारण बन जाता है। अनियोजित भूमि उपयोग के फलतः नगर सीमा में अनेक ऐसे भूमि उपयोग पाये जाते है जिनसे सम्पूर्ण नगरीय जीवन प्रभावित होता है। जैसे – नगरीय सीमा में खतरनाक उद्योगों की स्थापना, सड़कों के अवरोध के रूप में मकानों का निर्माण, जल निकासी से सम्बन्धित अवरोध, अनुपयुक्त भूमि पर आवासीय गृहों का निर्माण आवागमन के मार्गो के

लिए कम भूमि आवंटन आदि।

अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरों का विकास भी अनियोजित रूप से हुआ है। फलतः नगरों में भूमि उपयोग से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ इन नगरों की विशेषता बन गई है। नगरों के केन्द्रीय भाग जो अनियोजित रूप से सघन आबाद क्षेत्र है नगरीय समस्याओं के केन्द्र है। जहॉ एक तरफ भूमि का मूल्य अत्यन्त ऊँचा हैं वहीं दूसरी ओर भूमि के गलत और अनियोजित उपयेाग से अनेक समस्याएँ जैसे– जल निकासी, सफाई एवं कूड़ा के निस्तारण, संकीर्ण सड़के, खुली भूमि का अभाव प्रमुख हो गई है।

2. आवासीय समस्याएँ :–

मानव के मूलभूत आवश्यकताओं में भोजन के पश्चात् वातावरण से अनुकूलन स्थापित करने हेतु आवास मानव की अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता है। नगरों में जितनी तीव्रता से जनसंख्या की वृद्धि होती है उतनी तीव्रता से उनके रहने के मकानों की वृद्धि नहीं होती है। औद्योगिक नगरों में यह स्थिति और विषम हो जाती है। नगरीय जनसंख्या में वृद्धि के साथ–साथ अधिक मकानों की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार आय में वृद्धि एवं जीवन स्तर में उन्नयन के कारण भी लोग छोटे तथा सघन बसे क्षेत्रों के पुराने मकानों को छोड़कर बड़े मकानों एवं खुले में जाना पसन्द करते है। जिससे

नगर का विस्तार होता है। यद्यपि कि भूमि का उपयोग उद्योग–धन्धों, व्यापार–व्यवसाय के लिए अधिक होता है। फिर भी नगर का अधिकांश भाग आवासीय कार्यो के लिए ही प्रयुक्त होता है। जनसंख्या के विकास के अनुपात में प्रत्येक नगरों में आवास गृहों का निर्माण बहुत ही कम होता है। फलस्वरूप निचला गंगा–घाघरा दोआब में गन्दी बस्तियों का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है।

स्नानगृह एवं शौचालय युक्त आवास उच्च जीवन स्तर के द्योतक होते है। निचला गंगा–घाघरा दोआब में स्नानगृह एवं शौचालय युक्त आवासों का प्रतिशत अत्यन्त कम है जो अध्ययन क्षेत्र के पिछड़ेपन,गरीब जनसंख्या एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के अभाव का द्योतक है। जनपद के नगरीय क्षेत्रों में (88.73 प्रतिशत) आवासों मे स्नानगृह और शौचालय उपलब्ध है जबकि (11.27 प्रतिशत) आवासों मे स्नानगृह और शौचालय का अभाव है। तालिका से स्पष्ट है कि स्नानगृह और शौचालय सबसे अधिक (96 प्रतिशत) हाफीजपुर नगर मे तथा सबसे कम (82 प्रतिशत) अमिला मे मिलते हैं। विभिन्न नगरों में स्नानगृह और शौचालयों का अभाव सबसे अधिक 18 प्रतिशत अमिला मे और सबसे कम (04 प्रतिशत) हाफीजपुर नगर मे मिलता है।

3. जलापूर्ति की समस्याएँ :–

मानव जीवन में जल का विशेष महत्व है। इसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता है। जल का प्रतिस्थापन मुश्किल है। जल की अपर्याप्तता और अशुद्धता से मानव स्वास्थ्य प्रभावित होता है। जल के इसी महत्व के कारण प्राचीन काल से ही नगरों की स्थापना जल स्रोतों के किनारे हुई है। परन्तु आधुनिक काल में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि और जल के प्रति व्यक्ति अधिक खपत के कारण उपलब्ध जल संसाधन समाप्त होते जा रहे है। साथ ही नगरीय वर्हिस्राव के परिणामस्वरूप नगर में उपलब्ध जल की मात्रा का एक बड़ा भाग प्रदूषित होकर उपयोग के लिए हानिकारक हो रहा है। ऐसे में नगरीय अधिकारियों द्वारा जल की आपूर्ति को निरन्तर बढ़ाये जाने के बावजूद नगरों में जल की मॉग निरन्तर बढ़ती जा रही है और जल संकट गहराता जा रहा है। नगरीय जल के अनेक स्रोत है, जिससे नदी, झील, भूमिगत जल, झरना प्रमुख है। नगरों में जल की मॉग और आपूर्ति के बीच सदैव अन्तर पाया जाता है। जिसे नगर नियोजक और प्रशासनिक अधिकारी नयी–नयी प्रायोजनाओं के माध्यम से कम करने का प्रयास करते है। जहॉ कहीं ऐसा नहीं होता हैं नगरीय जीवन प्रभावित होता है।

4. विद्युत, ईंधन एवं संचार आदि की समस्याएँ :–

ऊर्जा की सतत आपूर्ति नगरों की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसके द्वारा ही नगरीय क्षेत्रों की विविध आवश्यकताएं पूरी होती है और कृषि तथा

औद्योगिक उत्पादन सम्भव होता है। किसी क्षेत्र के त्वरित विकास हेतु विद्युतीकरण मूलभूत अवस्थापनात्मक तत्व के अन्तर्गत आता है। नगरों में विविध कार्यों के लिए लकड़ी, कोयला, गैस, किरोसीन और बिजली का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता है। ईंधन की आवश्यकता दो प्रकार की होती है। प्रथम कल–कारखानों को चलाने के लिए द्वितीय घरों में भोजन पकाने व प्रकाश के लिए। कल कारखानों में तो अधिकांश ईंधन की आपूर्ति कोयले द्वारा हो जाती है परन्तु सबसे बड़ी समस्या हैं घरों में ईंधन की।

अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरों में ऊर्जा का मुख्य स्रोत विद्युत है। विद्युत के अतिरिक्त ऊर्जा के अन्य साधनों में कोयला, पेट्रोल, डीजल, किरोसिन और लकड़ी है। इस क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति अनपरा ताप विद्युत गृह से की जाती है। अनपरा (सोनभद्र जनपद) से 400 के0वी0 विद्युत की आपूर्ति साहूपुरी (सारनाथ) में होता है। तथा साहूपुरी से 400 के0वी0 विद्युत आपूर्ति निचला गंगा घाघरा दोआब में होती है।

निचला गंगा–घाघरा दोआब में विद्युत उपभोग के स्तर के माप हेतु आधुनिक उपभोग की वस्तुओं को आधार बनाया गया है। इससे अध्ययन क्षेत्र में विद्युत के उपभोग का स्तर प्रति परिवार स्पष्ट है। जिसे तालिका से स्पष्ट किया गया है।

Airo International Research Journal
Volume XII, ISSN: 2320-3714
August 2017
Impact Factor : 0.75 to 3.19
UGC Listed (Approved Number Number 63012)

5. स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की समस्याएँ :–

शिक्षा की कमी और वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण ही विकास और स्वास्थ्य के बीच एक प्रभावशाली सह–सम्बन्ध पाया जाता है। कम विकसित देशों में स्वास्थ्य समस्याएं अपेक्षाकृत निम्न स्तरीय होता है। अल्प विकसित देशों में स्वास्थ्य समस्याएं अपेक्षाकृत जीवन स्तर के निम्न होने के कारण बढ़ जाती है। कम विकसित देशों में जो लोग बीमार पड़ते है, उनका डाक्टरों व अस्पताल तक पहुॅचना कठिन होता है। ऐसे देशों में नगरों की बढ़ती हुई जनसंख्या तथा सुव्यवस्थित आवास तथा रोजगार न मिलने के कारण नगर के अन्तर्गत रहने वालों का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रह पाता, जिससे नगर में मरीजों की संख्या बढ़ती जाती हैं इन मरीजों के इलाज की व्यवस्था नगर के अन्तर्गत अस्पताल में होती है परन्तु नगर के अन्तर्गत न तो उतने अस्पताल है और न उसमें इतनी क्षमता है। इस कारण नगर के सभी मरीजों का इलाज संतोषप्रद नहीं हो पाता है। भारतीय नगरों में सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधा की कमी के कारण निजी अस्पतालों एवं नर्सिग होम को बढ़ावा दिया गया है जहॉ केवल साधन सम्पन्न वर्ग ही स्वास्थ्य खर्च वहन कर पाता हैं नगरों में ग्रामीण जनसंख्या भी पर्याप्त संख्या में स्वास्थ्य सुविधा के लिए आती है जिसके कारण चिकित्सा संस्थाओं पर भीड़ बढ़ती जा रही है। अध्ययन क्षेत्र की ग्रामीण जनसंख्या प्रधानतः चिकित्सा सेवाओं हेतु नगरीय

क्षेत्रों पर आश्रित है।

6. जल निकासी की समस्याएँ :–

जल निकासी की समस्या नगरों में दो प्रकार की होती है। पहली मलजल निकासी और दूसरी वर्षा जल निकासी की। नगर में सभी वस्तुओं का प्रयोग होता है। जिससे विसर्जन भी काफी मात्रा में होता है और उसे बहुत सी गन्दगियों से मुक्त होना पड़ता है। कारखानों के द्वारा जो जल का प्रयोग किया जाता है, उसे पुनः जमीन के अन्दर भेज दिया जाता है या नदियों में लौटा दिया जाता है। मल–स्राव से जल विषैला हो जाता है और इसके विसर्जन की समस्या बहुत ही गंभीर हैं दुर्भाग्यवश भारतीय नगरों में प्रायः नाले–नालियाँ खुली होती हैं जिसके कारण आस–पास की बस्तियाँ बहुत ही अस्वास्थ्यकर हो जाती है और तरह–तरह की बीमारियाँ नालों के नजदीक के मुहल्लों में फैलती रहती है।

नगरों में वर्षा जल निकासी की अपनी एक अलग समस्या है। नगर के विभिन्न भाग का धरातल समान नहीं होता और गृह निर्माण मनमाने तथा अनियोजित ढंग से होता है। अतः वर्षा का जल जगह–जगह एकत्र होकर गन्दे तालाबों का रूप धारण कर लेता है। फलस्वरूप नगर के निचले भाग में पानी भर जाता है। जो साल के कई माह तक गन्दे तालाब के रूप में पड़ा

रहता है, जो आस–पास के मुहल्लों के स्वास्थ्य के लिए अहितकर होते है। ये मुहल्ले प्रायः मच्छरजनित व श्वाँस रोग के शिकार रहते है।

तालिक से स्पष्ट है कि निचला गंगा–घाघरा दोआब के नगरीय क्षेत्र में घरेलू जल निकासी के लिए आज भी (2.9 प्रतिशत) परिवारों के मकान के पास नाली की सुविधा का अभाव है। इसमें से (5.2 प्रतिशत) परिवारो में घरेलू जल मकान के चतुर्दिक फैल जाता है जबकि (2.9 प्रतिशत) मकानों का जल मकानों में ही रह जाता है। अध्ययन क्षेत्र के (5.1 प्रतिशत) नगरीय मकान ऐसे है जहाँ पर आस–पास में नाली की सुविधा नही है, साथ ही (5.57 प्रतिशत) मकानों के पास जल जमाव रहता है।

यातायात की समस्याएँ :–

नगरीय जीवन की उत्कृष्टता, सहज और सुव्यवस्थित गमनागमन में निहित होती है। क्योंकि कार्य सम्पादन में इसकी अहम् भूमिका होती हैं नगरीय यातायात सुविधा की तुलना में जब उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ने लगती है तो गमनागमन बाधित होने लगता है। सड़कों पर जब क्षमता से अधिक वाहन गतिमान होते है तो सड़क जाम की समस्या यात्रा को बाधित करती है। नगरों में मोटर वाहनों की बढ़ती भीड़ विश्वव्यापी समस्या बन गई है। भारतीय नगरों में एक दूसरी समस्या यह भी है कि प्रायः नगर के बीच

या वाह्य भाग में सड़के व रेल मार्ग एक दूसरों को आर–पार (क्रासिंग) एक ही तल पर काटती है। फलस्वरूप रेलगाड़ियों के आने से काफी पहले (क्रासिंग) इस मार्ग को बन्द कर दिया जाता है जिससे क्रासिंग के दोनों ओर काफी देर तक भीड़ जमा हो जाती है।

निचला गंगा–घाघरा दोआब के रेल मार्गों की अभिगम्यता की दृष्टि से देखा जाय तो वाराणसी–मऊ तथा बलिया के निकट आवागमन सबसे अधिक हैं इन क्षेत्रों में गाड़ियों की कमी मिलती है। निचला गंगा–घाघरा दोआब का पूर्वी भाग मऊ तथा बिल्थरारोड एवं आजमगढ़ का मध्यवर्ती भाग तथा वाराणसी, औड़िहार एवं केराकत का क्षेत्र रेल मार्गों की दृष्टि से सबसे अधिक अभिगम्य है इस क्षेत्र में रेलवे स्टेशनों की संख्या 81 है।

स्मरणीय यह है कि अध्ययन क्षेत्र में बलिया, मऊ, आजमगढ़, औड़िहार–वाराणसी रेलवे स्टेशनों से द्रुतगति से चलने वाली रेलगाड़ियाँ देश के कोने–कोने तक जाती है परन्तु इन गाड़ियों में इतनी अधिक भीड़–भाड़ रहती है कि लोगों को यात्रा में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान समय में निचला गंगा–घाघरा दोआब के पक्की सड़कों की लम्बाई में काफी वृद्धि हुई है क्योंकि अधिकांश चौड़ी कच्ची सड़के पक्की सड़कों के रूप में परिवर्तित कर दी गई है। परन्तु आज भी गांवों को नगरों

से जोड़ने वाली अधिकांश सड़के कच्ची सड़कों के ही रूप में ही मिलती है। जिससे लोगों को आवागमन में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र में कुछ ऐसे भी क्षेत्र है जहॉ पर बाढ़ के कारण प्रति वर्ष सड़के क्षतिग्रस्त हो जाती है। यह क्षेत्र गंगा और घाघरा नदियों के किनारों पर बसे हुए गांवों के समीपवर्ती क्षेत्रों की सड़कें है।

पर्यावरणीय प्रदूषण एवं पर्यावरणीय अवनति की समस्याएँ :–

प्रदूषण आधुनिक नगरों के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है, जिस पर यदि समय रहते नियन्त्रण नही किया गया तो समस्त नगरीय सभ्यता के अस्तित्व को समाप्त कर सकता है। यह प्रदूषण नगरों में उद्योगों के जमघट, खनिज तेल आधारित वाहनों की बढ़ती संख्या, नगरों में जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि, नगर वासियों में उपभोक्तावादी संस्कृति के तीव्र विकास, नगर और उसके समीपवर्ती भागों में पेड़–पौधों का विनाश, नगरों की विलासितापूर्ण जीवन पद्धति, प्लास्टिक आदि पदार्थो के बढ़ते प्रयोग, नगरवासियों के कम पर्यावरण बोध एवं नागरिक संस्थाओं तथा सरकारी तन्त्र के प्रदूषण नियन्त्रण पर विफलता आदि के कारण हैं। इस प्रदूषण में वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण एवं जल प्रदूषण आदि प्रमुख है। जिनका नगरवासियों और जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

Airo International Research Journal
Volume XII, ISSN: 2320-3714
August 2017
Impact Factor : 0.75 to 3.19
UGC Listed (Approved Number Number 63012)

ध्वनि प्रदूषण :–

जब ध्वनि की तीव्रता इतनी बढ जाय की वह कर्णप्रिय न रह जाय तो उसे शेर या ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है। आज के यांत्रिक युग में उद्योग धन्धों एवं वाहनों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही हैं जिससे मशीनों एवं वाहनों का कोलाहल बढ़ता जा रहा है। ध्वनि प्रदूषण नगरीय संस्कृति की देन है। महानगरों में चलने वाले वाहन (ट्रक, बस, कार, टेम्पो, स्कूटर, रेलगाड़ी, आदि) एवं वायुयान, औद्योगिक क्षेत्रों में मशीनों और साइरनों की आवाजें, व्यस्त बाजारों में विक्रेताओं के शोर, रेडियों, टी0वी0 एवं लाउडस्पीकर, धार्मिक एवं सामाजिक क्रियाएं इनके प्रमुख स्रोत है। अनेक अध्ययनों से यह तथ्य प्रकट होता है कि उच्च यातायात घनत्व और औद्योगिक विशेषता वाले महानगरों में ध्वनि एक बड़ा संत्रास हैं नगर के विभिन्न भागों में इस तरह स्थान, समय, जनसंख्या घनत्व कार्यात्मक संरचना आदि से प्रभावित होता है। अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरों में औद्योगिक ईकाइयों की स्थापना, वाहनों की संख्या में वृद्धि आदि तथ्यों ने प्रदूषण की स्थिति को बढ़ाया है।

अध्ययन क्षेत्र में प्रति चयन सर्वेक्षण के आधार पर किये गये अध्ययन से स्पष्ट है कि निचला गंगा–घाघरा दोआब के नगरीय क्षेत्रों में 35 प्रतिशत लोगों के अनुसार ध्वनि प्रदूषण है। नगरीय क्षेत्रों में ध्वनि के प्रमुख स्रोतों में 59 प्रतिशत घरेलू, 10 प्रतिशत उद्योग, 11 प्रतिशत वाहन, 06 प्रतिशत

लाउडस्पीकर, 06 प्रतिशत अन्य स्रोत है। विभिन्न नगरों के स्तर पर सर्वाधिक 46 प्रतिशत लोगों ने ध्वनि प्रदूषण को आजमगढ़ नगर में स्वीकार किया गया है। प्रमुख प्रदूषकों में 78 प्रतिशत मऊनाथभंजन नगर एवं अमिला नगर, 15 प्रतिशत वाराणसी एवं आजमगढ़ नगर, 18 प्रतिशत फूलपुर एवं मुहम्मदाबाद, लाउडस्पीकर से 9 प्रतिशत मऊनाथभंजन एवं रसड़ा में तथा अन्य स्रोतों में 8 प्रतिशत मऊनाथभंजन नगर में प्रमुख है।

वायु प्रदूषण :–

नगरों में खनिज तेल आधारित वाहनों से निःसृप्त धुँआ,उद्योगों की चिमनियों से निकलने वाली गैसे एवं धूल कण,सड़ते हुए कूड़ा–करकट और मालवा से उत्पन्न मैले,रिफ्रीजरेशन प्रणाली से उत्पन्न क्लोरो फ्लोंरों कार्बन गैसे आदि वायु प्रदूषण के प्रमुख कारक है। वायु प्रदूषण के अन्य कारणों में रसायनों का छिडकाव और खेती के लिए अतिरिक्त जमीन जुटाने के लिए वनों, झाड़ियों और घास में आग लागा कर साफ करना भी सम्मिलित है। चूंकि निचला गंगा घाघरा दोआब एक वन विहीन कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहाँ पर अत्यधिक मात्रा में कृषि कार्य हेतु दवाओं का प्रयोग किया जाता है। जिससे प्रदूषण दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा हैं।

अध्ययन क्षेत्र निचला गंगा घाघरा दोआब में वायु प्रदूषण की स्थिति की

जानकारी हेतु शोधार्थी द्वारा विभिन्न नगरों में प्रतिदर्श अध्ययन किया गया है जिससे प्राप्त स्थिति तालिका से स्पष्ट है।

कूड़ा–करकट एवं मल–मूत्र विसर्जन की समस्याएँ :–

कूड़ा–करकट उन पदार्थों को कहते है जिन्हें उपयोग के बाद बेकार या निरर्थक मानकर फेंक दिया जाता है जैसे– जंग लगी पिन, टूटे काँच के समान, प्लास्टिक के डब्बे, पालीथीन के थैले, टिन के डब्बे और कनस्तर, पुराना कागज, राख, घरेलू कूड़ा–करकट आदि। इन्हें अवपशिष्ट, कचरा, कूड़ा, ठोस अपशिष्ट आदि कई नामों से जाना जाता है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण और नगरीकरण के कारण ठोस अपशिष्ट पदार्थों की मात्रा में बेतहाशा वृद्धि हुई है तथा इनका संग्रहण और निपटान एक बहुत बड़ी समस्या बन गई है जिससे पर्यावरण को गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है। नगरों में ठोस अपशिष्टों की बढ़ती मात्रा यहाँ की भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी समाज की देन है। इनमें पश्चात्य जगत की ''प्रयोग करो और फेंकों संस्कृति'' ने उत्प्रेरक का कार्य किया है। बढ़ती जनसंख्या और उसके बढ़ते घनत्व के कारण आधुनिक नगरों में स्थान–स्थान पर गन्दगी और कूड़े–कचरे के ढेर नजर आ रहे है। ऐसे में लोगों को स्वस्थ्य जीवन जीना दूभर हो गया है। यह कूड़ा–कचरा केवल गन्दगी ही नही फैलता है, वरन अनेक गम्भीर रोगों का वाहक भी बनता है। मलेरिया, हैजा, आँत्रशोथ आदि

अनेक बिमारियाँ गन्दगी की वजह से महामारी का रूप धारण कर लेती है। यद्यपि अनेक नगरों में कचरा निपटान के भराव स्थल बनाये गये है लेकिन वह पर्याप्त नही है।

इस कूड़े–कचरे का निपटान सही तरीके से नहीं किया जाय, तो इस बात से आप अन्दाज लगा सकते है कि यदि हर घर परिवार वाला प्रतिदिन दो किग्रा0 कूड़ा–कचरा भी अपने घर से बाहर फेंकता है, तो नगर में गन्दगी के बहुत बड़े ढेर लग सकते है। अतः यह एक गम्भीर समस्या है, नगरीय कूड़ा–करकट में आवासीय क्षेत्रों, उद्योगों एवं अस्पतालों के अवशेषों को सम्मिलित करते है। इन अपशिष्टों से न केवल इनकी सड़न से उत्पन्न दुर्गन्ध आवासीय क्षेत्रों की वायु को दूषित करती है वरन् इन पर आश्रित मक्खियाँ, मच्छरों, चूहों, सूअरों, कुत्तों और पुशओं के सम्पर्क में आने से मलेरिया, हैजा, मियादी बुखार, प्लेग, डेंगू, अतिसार, डिप्थिरिया आदि विमारियों के खतरे बढ़ जाते है जिसका मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव होता है।

नगरों के विभिन्न कार्यों के लिए बड़ी मात्रा में जल के उपयोग से काफी मात्रा में अपशिष्ट जल का निर्माण होता है। इसका निकास और निस्पादन नगर पालिकाओं के लिए एक प्रमुख समस्या है। मल–जल निकास की समुचित व्यवस्था के अभाव में यह जल नगर के खुले स्थानों में इकट्ठा

होता रहता है अथवा खुली नालियों से प्रवाहित होता है जो धरातलीय जल स्रोतों को प्रदूषित करता रहता है। इससे नगर वासियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। निचला गंगा–घाघरा दोआब क्षेत्र में विभिन्न नगरों से जल–मल नालों के द्वारा गंगा,घाघरा,टोंस नदियों एवं विभिन्न तालों में बहा दिया जाता है। जिससे प्रदूषण बढ़ जाता है। गंगा एवं घाघरा नदियों का पानी पीने के योग्य भी नहीं रह गया है। अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरो में कूड़ा–करकट एवं मल–मूत्र विसर्जन की स्थिति का अध्ययन प्रति चयन के आधार पर किया गया है।

तालिका से स्पष्ट है कि निचला गंगा–घाघरा दोआब नगरीय केन्द्रों में 7 प्रतिशत घरेलू कचरे का संग्रह खुले में किया जाता है। यहाँ 25 प्रतिशत कचरे को बन्द डिब्बे में जबकि 04 प्रतिशत कचरे का संग्रह नहीं किया जाता है। मुहल्लों में घरेलू कचरे की स्थिति को 75 प्रतिशत लोगों ने स्वीकार किया जबकि 25 प्रतिशत लोग ऐसा नहीं मानते है। नगरों के औद्योगिक कचरे की स्थिति को 15 प्रतिशत लोग स्वीकार करते है जबकि 85 प्रतिशत मानते है कि कोई औद्योगिक कचरा नहीं है।

विभिन्न नगरों में कूड़ा–करकट की समस्या में भिन्नता मिलती है। सर्वाधिक खुले में घरेलू कचरे का सैदपुर (81 प्रतिशत) नगर में, बन्द डिब्बे में कचरे का सर्वाधिक विस्तारण सहतवार,रेवती,अतरौलिया एवं सरायमीर (32

प्रतिशत) हैं। बलिया एवं दोहरीघाट में सबसे अधिक मात्रा में कचरे का संग्रह नहीं किया जाता है।

अन्य समस्याएँ :–

नगर की अन्य समस्याओं में खुली भूमि का अभाव, शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्या, अनियोजित भूमि उपयोग की समस्या आदि प्रमुख है। अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरों में खुली भूमि का अभाव मिलता है। इसमें सबसे अधिक खुली भूमि का अभाव वाराणसी में मिलता है। अध्ययन क्षेत्र के लगभग सभी नगर शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्या और अनियोजित भूमि उपयोग की समस्या से ग्रस्त है। नगरों में पार्क, खेल के मैदान के अनियोजित भूमि उपयोग के कारण जल भराव के परिणामस्वरूप नगरों को स्वास्थ्य को बनाये रखने में कठिनाई होती है।

निचला गंगा–घाघरा दोआब के नगरों की अन्य समस्याओं में खुली भूमि का अभाव, शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्या, अनियोजित भूमि उपयोग की समस्या आदि प्रमुख है। अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न नगरों में खुली भूमि का अभाव मिलता है। इसमें सबसे अधिक भूमि का अभाव मऊनाथ भंजन नगर, बलिया, वाराणसी एवं आजमगढ़ में मिलती हैं। अध्ययन क्षेत्र के लगभग सभी नगर शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्या से और अनियोजित भूमि उपयोग की

समस्या से ग्रस्त है। नगरों में पार्क,खेल के मैदान के अनियोजित भूमि उपयोग के कारण जल प्रदूषण के परिणामस्वरूप नगरों के स्वास्थ्य को बनाये रखने में कठिनाई होती है।

उपर्युक्त समस्याएँ इस बात की ओर संकेत करती है कि निचला गंगा–घाघरा दोआब के नगरों का न केवल पुनरूद्धार किया जाए वरन नये नगरों को योजनाबद्ध प्रणाली के अन्तर्गत बसाया जाये। नगरों को विशाल आकार से परिवर्तित होने से रोका जाये। इसके साथ–साथ नगरों का निर्माण करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाये –

नगर निर्माण के पूर्व आयोजनाओं का चयनः–

1. निचला गंगा–घाघरा दोआब में नगर–निर्माण सम्बन्धी योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर अधिनियम बनाया जाये।

2. नगरों के वायु मण्डल को दूषित होने से रोका जाये। उद्योगों को नगर से बाहर ऐसे स्थानों पर हवा के विपरीत दिशा में बसाया जाये, जिससे उसका धुँआ व दुर्गन्ध नगर में न प्रवेश कर सके। कोयले एवं लकड़ी के स्थान पर गैस का प्रयोग घरों में इंधन के रूप में बढ़ाया जाये। वाहनों के शोर–शराबे से निवास स्थानों को दूर बसाया जाये। प्रमुख सड़क मार्गों के सहारे निवास स्थानों का निर्माण न किया जाये।

3. सूर्य का प्रकाश तापक्रम तथा वर्षा सम्बन्धी दशाओं की पूर्ण जानकारी प्राप्त करके ही मकानों को बनाया जाय।

4. निचला गंगा–घाघरा दोआब में नगरों का ढॉचा नगरवासियों की सामाजिक आर्थिक दशाओं के अनुरूप होना चाहिए।

5. निचला गंगा–घाघरा दोआब पुराने नगरों का पुर्न निर्माण हो, विशेष रूप से वाराणसी, मऊ, बलिया आजमगढ़, जौनपुर, केराकत, रसड़ा, एवं मुबारकपुर नगर के मध्यवर्ती भाग को फिर से बसाया जाये जहॉ पर अत्यधिक भीड़–भाड़ हो गई है। अनियोजित तरीके से बसे क्षेत्रों का पुर्ननिर्माण किया जाये। गन्दी बस्तियों की सफाई की जाये।

6. निचला गंगा–घाघरा दोआब के समस्त नगरों में सड़कों और नालियों का विकास ठीक प्रकार से किया जाय। यातायात व्यवस्था को इस प्रकार से व्यवस्थित किया जाय कि सभी प्रकार के वाहन सड़कों पर बिना किसी को क्षति पहुँचायें तथा गति को बनाये रख कर विचरण कर सकें। भारी वाहनों के लिए रिंग बाँध का विकास किया जाये। अध्ययन क्षेत्र के वाराणसी जैसे महानगर में भूमिगत रेलमार्गों का विकास किया जाय तथा आवश्यकता हो तो खम्भों पर सड़कों एवं रेल मार्गों की स्थापना की जाये।

नगरों को वर्तमान समाज की आवश्यकता के अनुरूप बनाया जाये। नगरों की व्याख्या करते हुए ममफोर्ड ने कहा हैं कि –

"अपने पूरे अर्थ में नगर एक भौगोलिक इकाई है, एक आर्थिक व्यवस्था है, एक औद्योगिक प्रसारण है; सामाजिक कार्य का नाट्य स्थल और सामूहिक एकता का सुन्दर समन्वय तथा चिन्ह है।"

इस प्रकार निचले गंगा–घाघरा दोआब की समस्याओं के अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ पर व्याप्त प्राचीन नगरीय केन्द्रों की स्थिति समय के अनुरूप सुव्यवस्थित न होने के कारण अनेक समस्याओं का नगरों के द्वारा सामना किया जा रहा है जिसे आज के वर्तमान परिवेश में सुनियोजित ढंग से सरकार तथा स्वयं सेवी संस्थाओं के फलस्वरूप इन समस्याओं को दूर किया जा सकता हैं।

भारत एवं उत्तर प्रदेश सरकार ने नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि तथा उसे उत्पन्न नगरीय समस्याओं को ध्यान में रखते हुए अपनी जनसंख्या नीति के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रमों को प्रारम्भ किया है। State Plan on Action on Nutrition, Javani Suraktha Yojana, Jawaharlal Nehru National Urban Revewal Mistion, Valmiks Ambedker Awas Yojana, Integrated develpoment of Small and Medium Towns, Accelerated Urban Water Supply Programme vkfnA नगरीय क्षेत्रों में बढ़ती जनसंख्या को विशेष

रूप से गरीब जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा के लिए भी योजनाएँ लागू की गयी हैं जैसे अन्त्योदय योजना, अन्नपूर्णा योजना, आदि। संविधान के 75वें संशोधन के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं को भी सशक्त किया गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार उत्तर प्रदेश के ऑकड़े कहते हैं कि नगर में रहने वाले दस लोगों में तीन गरीब है। स्वाभाविक है कि उनकी स्वास्थ्य स्थितियाँ भी खराब होंगी तथा अधिवास समस्या भी होगी। अगले अध्याय में जब सामाजिक–सास्कृतिक आधार पर पूरे निचला गंगा–घाघरा दोआब क्षेत्र के नगरीय क्षेत्रों को कुछ मानकों के आधार पर सीमांकन करेंगे तो नगरीय स्थिति और अधिक उद्घाटित होगी।

संन्दर्भ सूची

1. United Nations 2002. *World Urbanisation Prospects : The 2001 Religious.* New York : The United Nations.

2. *Uttar Pradesh Census of India 2001*. Series 10, Vol 1. Directorat of Census Operations, Uttar Pradesh.

3. Singh, O.P. 1975-76. "Growth of Population in Sizable Town of Uttar Pradesh". *Geographical Organizer*. Vol. 77; Turner, Roy, ed. 1962.

India's Urban Future. Berkeley: University of California Press.

4. F. Cherunilam. 1999. *Urbanisation in Developing Countries: Economic & Demographic Analysis*,New Delhi : D.K. Publications.

5. C.S. Yadav. 1998. *Urban Economics*. New Delhi : D.K. Publication; C.A.K. Yesudian. 1998.*Health Services Utilisation in Urban India.* New Delhi : Mittal Publication.

6. K. Mehta. 1999. *Population Mobility and Economic. Development in India*. New Delhi : D.K.Publications; James, H.E. 1930. *Urban Geography of India*. Philadelphia : Bulletin of The Geographical Society 28.`

7. M. Dewan. 2000. *Urban Ecology and Levels of Development*. New Delhi : Rawat Publication.

8. N.L. Gupta. 2000. *Urban Water Supply*. New Delhi : Rawat Publication.

9. V. Garimella. 2000. *Urban Demography and Ecology : A Case Study of An Indian City*. New Delhi : D.K. Publication.

10. Tiwari, R.C. 1980. "Spatial Organization of Service Centres". *National Geography*. Vol. 15.